दिनांक 12 नवम्बर, 1979 को मुरैना, मध्य प्रदेश में, प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का उद्बोधन

———————————————————

मान्यवर सभापति जी, बहनों और दोस्तों,

अभी कोई डेढ़ महीने के अंदर हिंदुस्तान की बड़ी पंचायत, जिसका नाम लोकसभा है, उसका चुनाव होने जा रहा है। यहॉ तीन दल हैं, सारे हिंदुस्तान में जिनके उम्मीदवार खड़े हुए हैं। वो आपसे वोट मांगने आयेंगे। एक दल तो इंदिरा जी का है, उसका नाम ही इंदिरा की कांग्रेस है, दूसरा है जनसंघ का, कुछ लोग कांग्रेस के साथ हैं, लोग उनके साथ हैं, मोराजी देसाई के जो साथ थे उनके लीडर हैं – जगजीवनराम जी, जिन्होंने इमरजेंसी का प्रस्ताव पेश किया था और जब चुनाव आया तो कांग्रेस को छोड़कर जनता पार्टी में शामिल हो गये। तीसरा है लोकदल और कांग्रेस के वो लोग, चव्हाण वगैरह जो कि इंदिरा जी से नाराज थे, इस बात पर कि इमरजेंसी लगाने पर उन्होंने अफसोस प्रकट नहीं किया। वो कहते थे गलती हुई है, गलती स्वीकार करनी चाहिए। इंदिरा ने कहा हमारी कोई गलती नहीं है, तो वो छोड़कर हमारे साथ आ गये। तो ये लोकदल कांग्रेस गठबंधन कह सकते हैं इसे। यह नयी टीम इसी लोकदल गठबंधन की ओर से है।

तो मैं आपको यह मशविरा देना चाहता हूं कि अगले चुनाव में हिंदुस्तान का प्रबंध कैसा हो, वो सरकार के द्वारा तय होगा, तो आप हमारी पार्टी को वोट दें। सवाल यह होता है क्यों ? और पार्टियों को क्यों न वोट दी जाये ? तो मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि हिंदुस्तान की जो चार बड़ी–बड़ी समस्याएं हैं, उनका इलाज या समाधान हमारी पार्टी के पास है और किसी के पास नहीं। चार बड़ी–बड़ी समस्याएं या मसले जो हिंदुस्तान के सामने हैं, वे यह हैं : एक तो हमारे देश की गरीबी और गरीबी ही नहीं समय बीतने के साथ गरीबी का बढ़ते जाना। जब इंदिरा जी ने सन् 66 में देश का चार्ज संभाला था तो उससे पहले साल 64–65 में 125 देशों में से हमारे देश का नंबर 85वां था। 84 देश हमसे मालदार थे और 40 देश हमसे गरीब थे। 8 साल बाद सन् 76 में हमारे देश का नंबर 104 हो गया। 103 देश गरीब और 21 देश .... नहीं, 103 देश मालदार और 21 देश गरीब। तीन साल के अंदर ही 73 के बाद 76 में हम आठ पोजीशन और नीचे खिसक गये। आज हमारा नंबर 111वां है, अर्थात 110 देश हमसे मालदार हैं और केवल 14 देश, जिनमें से बहुतों के नाम न आपने सुने हैं न मैंने सुने हैं, जिनकी आबादी दस–दस लाख के करीब है, अधिकतर वो देश हैं, जो आज हमसे गरीब हैं।

तो मैं आपको यह बतलाना चाह रहा था कि गरीबी है, होती है, गरीबी के कुछ कारण होते हैं। मिटने की बजाय स्वराज होने के बाद हमारी गरीबी दूसरे देशों की अपेक्षा बढ़ी है। हम पीछे खिसकते गये हैं। एक तो समस्या है गरीबी की। इसी सिलसिले में यह बताना चाहता हूं कि हमारे प्लानिंग कमीशन के अनुमान के अनुसार 48 फीसदी आदमी हमारे देश में कुपोषण के शिकार हैं, अधिकतर वो गांवों में रहते हैं, थोड़े बहुत शहर में भी हैं और दूध हमारे यहां पहले से ही बहुत कम हो गया था। अंग्रेजों के जमाने में भी सबको दूध नहीं मिलता था। अब तो हमारे बच्चों को भी दूध नहीं मिलता। दूध दवा बनकर रह गया है, इन 48 फीसदी आदमियों के लिए। यह तो गरीबी का हाल है।

और दूसरी बात है बढ़ती हुई बेरोजगारी की। जैसे गरीबी हुई है, बढ़ती हुई गरीबी, ऐसे ही समय बीतने पर हमारी बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। शहर में एक करोड़ 40 लाख आदमियों ने काम–दिलाऊ दफ्तर में नाम लिखवाया हुआ है, कि हम रोजगार चाहते हैं। पढ़े–लिखे लड़के एफ0ए0 पास, बी0ए0 पास, एम0ए0 पास, इंजीनियरिंग, डाक्टर, ये मारे–मारे फिरते हैं। बहुत से लड़के हमारे यहां से दूसरे देशों में नौकरी करने को चले जाते हैं। हिसाब यह लगाया गया है कि 85 किसानों की आमदनी जो साल भर में होती है, उतना गवर्नमेंट का खर्च होता है, एक लड़के को बी0ए0 पास कराने में।

तो इस गरीब मुल्क का इतना खर्च कराकर हमारे लड़के मुल्क के विकास में मददगार नहीं हो पाते हैं, क्योकि उनको रोजगार नहीं मिलता। वो दूसरे देशों में जाकर मदद करते हैं–मालदार देशों की, अपनी सेवा और पुरूषार्थ के जरिये। यही नहीं कि हमारे यहां से पढ़–लिख कर लड़कों को दूसरे देशों को जाना पड़ता है बल्कि बहुत से लड़के पढ़ने ही चले जाते हैं–हजारों जर्मनी, अमरीका और इंग्लैंड और फिर वापस नहीं आते, वहीं बस जाते हैं।

तो यह बेरोजगारी है शहर के पढ़े–लिखे लोगों की। गांव में भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है। जमीन जो प्रकृति ने या इतिहास ने हमको दी थी, वो दादे–परदादों के जमाने में जितनी थी, उतनी ही आज है। हमारी तादद बढ़ती जाती है, जमीन नहीं बढ़ेगी। सन् 1857 में 18 करोड़ आबादी थी हिंदुस्तान की। आज 85 करोड़ है, बंगला देश और पाकिस्तान को शामिल करके। साढ़े चार गुना पौने पांच गुना आबादी बढ़ गयी, लेकिन जमीन जितनी तब थी उतनी अब है। तो अभी सन् 70–71 में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने एक संस्था से सर्वे या सर्वेक्षण करवाया था, यह जानने के लिए कि कितने आदमियों पर कितनी–कितनी जमीन है और कितनी जमीन में क्या फसल होती है और कितनी जमीन में सिंचाई है और कितनी जमीन में सिंचाई नहीं है। यह कहलाता है 'एग्रीकल्चरल सेंसस 1970–71'।

आप लोग खामेशी से मेरी बात सुनिये। ये मालूम होता है जनसंघ के या आर0एस0एस0 के लड़के कुछ शोर मचाना चाहते हैं। आप खामोशी से मेरी बात सुनो। तुमने यही सीखा है?

तो एक तिहाई किसान हमारे यहां ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे से कम जमीन है। दो बीघे से कम जमीन, एक तिहाई (33 फीसदी); और 18 फीसदी किसान हमारे यहां ऐसे हैं, जिनके पास दो बीघे से चार बीघे तक जमीन है और 19 फीसदी किसान हमारे यहां ऐसे हैं जिनके पास दो बीघे से ... 4 बीघे। 33 और 18 बराबर 51 और 19 बराबर 70। 70 फीसदी किसान ऐसे हैं जिनके पास एक बीघे से 8 बीघे तक जमीन है। इससे कैसे गुजर हो सकती है ? नहीं हो सकती! ये लोग एक तरीके से अर्द्ध रोजगार हैं, आधा समय इनका खाली जाता है, बल्कि आधे से भी ज्यादा जाता है। बेरोजगारी हमारे गांवों में बढ़ गयी। जब अंग्रेज आये थे बल्कि उससे कुछ बाद तक हमारे यहां सौ में सत्तरह थे खेतीहर मजदूर, जिनके पास जमीन एक बीघा भी नहीं थी। अब इनकी तादात साढ़े छब्बीस फीसदी है।

तो मजदूरों की तादाद गांव में बढ़ गयी, जो खेतों पर मजदूरी करते हैं। क्योंकि जमींदारों ने किसानों की जमीन छीन ली और वे बेचारे मजदूर हो गये। बहुत से लोगों की जमीन छीन ली, उनके पास थोड़ी–थोड़ी जमीन रह गयी। अब यहां मेरे पास मेरा मजमून नहीं बताने का, लेकिन यह बतलाये देता हूं चलते–चलते आपको कि बड़े किसानों की तादाद

सन् 60 में 23 लाख थी, जिनके पास 25 एकड़ से ज्यादा जमीन थी। सन् 71 में उनकी तादाद बढ़कर 28 लाख हो गयी। इस तरह कांग्रेस वालों ने जमींदारी को खत्म किया।

तो खैर ! गांव में भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है और बढ़ती जाती है। और तीसरी बात यह है तीसरी समस्या सबसे बड़ी है कि गरीबी–अमीरी का अंतर बजाय पटने के, कम होने के चौड़ा होता जा रहा है। अंग्रेजों के जमाने में ये नयी पीढ़ी के लोग महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश के लिए संघर्ष कर रहे थे तो हमारा तर्क यह होता था अंग्रेजों के खिलाफ कि उनके जमाने में गरीब और अमीर का अंतर बढ़ गया है। शहर और गांव का अंतर बढ़ गया है। बड़े सेठ पैदा हो गये जो पहले नहीं थे। स्वराज मिलेगा तो हम इस खाई को पाटेंगे। लेकिन दोस्तों। ठीक उल्टा हुआ। एक किसान या गांव वाले की आमदनी अगर सन् 50–51 में सौ रूपये थी तो शहर वाले की आमदनी पौने दो सौ रूपया थी। सन् 77–78 में अगर गांव वाले की आमदनी सौ रूपये थी तो शहर वाले की या खेती के अलावा दूसरा पेशा करने वाले की औसत आमदनी 346 रूपया। सौ और पौने दो सौ और सौ और साढ़े तीन सौ। पहले एक और पौने दो का फर्क अब एक और साढ़े तीन का। तो और जैसा मैंने कहा शहर में भी गरीब आदमी हैं। उनको भी निकाल दो तो शहर के चंद आदमियों के पास देश की आर्थिक सत्ता का केंद्रीकरण होता चला जा रहा है। इकट्ठी होती जा रही है चंद लोगों के हाथ में सारी दौलत। सेठ उस वक्त भी थे लेकिन कुछ कम। आज सेठों की जायदाद भी बढ़ गयी है और तादाद भी बढ़ गयी है। बिड़ला, टाटा का आपने शहर में नाम सुना होगा, सिर्फ दो के आंकड़े बताये देता हूं। बिड़ला के पास 116 करोड़ की संपत्ति थी सन् 50–51 में अब 1100 करोड़ की संपत्ति है। नौ गुना मालदार हो गया है। बिड़ला की जायदाद उससे टाटा से आधी भी नहीं थी– 53 करोड़ लेकिन वो भी आज 1100 करोड़ की सम्पत्ति का मालिक –– उसकी जायदाद बढ़ गयी है 19–20 गुना। तो इस तरीके से गरीब और अमीर का फर्क बढ़ता चला जा रहा है। गांव और शहर का फर्क बढ़ता चला जा रहा है। बड़े सेठों की तादाद बढ़ती जा रही है और उनकी संपत्ति भी बढ़ती जा रही है।

तो तीन बातें – देश की गरीबी बढ़ती जा रही है, बेरोजगारी शहर और गांव में बढ़ती जा रही है और गरीब और अमीर का फर्क भी और चौड़ा–चौड़ा होता चला जा रहा है। समय बीतने के साथ। लेकिन सब से ज्यादा खराबी इस बात में है, जो देश के लिए घातक सिद्ध होगी और हो चुकी है एक प्रकार से, वो यह कि अंग्रेजों के जमाने में छोटे–मोटे कर्मचारी कुछ रिश्वत ले लिया करते थे। हम यह समझते थे कि क्योंकि हमारा देश गुलाम है इसलिए हम रिश्वत से निकल नहीं पा रहे हैं। देश आजाद होगा तो हमारे यहां रिश्वत बंद हो जायेगी। लेकिन दोस्तों ! इस बात में भी ठीक उल्टा हुआ। हमारे कर्मचारियों ने भी, राज–कर्मचारियों ने भी रिश्वत लेनी शुरू कर दी। लेकिन मैं उनको इतना दोष नहीं देता। असल दोष तो राजनीतिक नेताओं का है। वह भ्रष्ट हो चुके हैं, जिसकी वजह से हमारे कर्मचारियों पर उनका कोई कंट्रोल नहीं होता। अगर आपके सूबे का चीफ मिनिस्टर भ्रष्ट हो और उसका कोई यश न हो, बदनाम हो, किसी दूसरे सूबे का भी चीफ मिनिस्टर अगर बदनाम हो, गृहमंत्री अगर रिश्वत लेता हो तो फिर सिविल एंड पुलिस कमिश्नर से यह उम्मीद करना कि वह ईमानदार होगा यह मुश्किल है। यह उम्मीद करना गलत होगा। अगर प्राइम मिनिस्टर रिश्वत लेता हो या सेठों से रुपया इकट्ठा करता हो, इलेक्शन के नाम पर तो भी देश के अंदर ईमानदारी नहीं हो सकती। कोई भी सक्रिय देश टूट जायेगा। संस्कृत का एक श्लोक है जो मुझे ठीक

याद नहीं है लेकिन जिसका अर्थ यह है कि महाजन जिस रास्ते जाते हैं, मामूलीजन भी उसी रास्ते चलते हैं। सर्वसाधारण बड़े आदमियों की राह चलते हैं। तो हम लोगों ने हमारे देश में आजादी के बाद जो महाजन हुए, बड़े आदमी हुए, जिनके हाथ में आर्थिक सत्ता आयी उन लोगों के चले जाने के बाद धीरे–धीरे सब नीचे की तरफ जा रहा है। आज की जो युवा पीढ़ी है मुझे उसके साथ बड़ी हमदर्दी है और मेरी समझ में नहीं आता कि ये लोग क्या करेंगे! जो मेरी पीढ़ी के लोग थे, सब जवान थे स्कूल और कॉलेज में पढ़ते थे, मैंने सन् 1919 में मेरठ में गवर्नमेंट स्कूल से हाई स्कूल पास किया था, मेट्रीकुलेशन। उसके बाद मैंने एम0ए0 पास किया सन् 1925 में, आगरा कॉलेज से। तो उस जमाने में जो मेरी पीढ़ी के लोग थे, हमारे सामने बड़े–बड़े महापुरूषों के आदर्श मौजूद थे तीन तो संन्यासी हो चुके थे बड़े–बड़े स्वामी दयानंद, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, इस्लाम के लोग, सन्यासी लोग उनका चरित्र और उनके उपदेशों को पढ़ा करते थे। उनकी जीवनी पढ़ा करते थे। फिर राजनीति के क्षेत्र में महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, पं0 मालवीय वगैरह–वगैरह अनेक लोग थे, जो हमारे लिये आदर्श थे। आज जो हमारी युवा पीढ़ी है स्कूल और कालेज में पढ़ती है उसके सामने क्या आदर्श हैं और किससे क्या सीखा है? किसके कदमों पर चलकर अपने जीवन को ढालें और अपने देश को बड़ा बनायें। इंदिरा की नकल करेंगी क्या हमारी बहू–बेटियां ? जगजीवन राम से कोई सबक मिल सकता है इनकी जिंदगी से ? अरे भाई हिंदू–संस्कृति की बात करते हैं, तो वो वाली बातें गयीं। अगर उनके बारे में मालूम करेंगे तो क्या उनके जीवन से हमारे नौजवानों को कोई सबक मिलेगा ? क्या मोरारजी भाई और कांति देसाई के जीवन से और अमल से कोई सबक हमारे बच्चों को मिलेगा। क्या जनता पार्टी का जो चेयरमैन है चंद्रशेखर इसको भी मैंने ही बनाया था, मुझे नहीं मालूम था। उसका जीवन जाकर देखो, उससे कोई सबक मिलेगा। बहुगुणा से सबक मिलेगा, किससे सबक मिलेगा ? लड़के जायें तो कहॉ जायें। जिस देश में आइडियल नहीं रहता, ''जिस देश की युवा पीढ़ी में कोई आदर्शवादिता नहीं रहती, जिनके सामने अच्छी मिसाल नहीं होती है, ऐसे देशों का भविष्य अंधकारमय होता है दोस्तों''। तो आज हमारे देश का भविष्य अंधकारमय है। कई बरस से मिनिस्टरी करने के बाद और तजुर्बे के बाद और अध्ययन के बाद मैं इस नतीजे पर सन् 1957 में पहुंच गया था कि देश के आर्थिक विकास को दिखाने का एक ही तरीका है और वो तरीका है महात्मा गांधी का तरीका। हमको दूसरे देशों की नकल करने से नुकसान होगा।

महात्मा दो सीधी सी बात कहते थे कि असली भारत गांवों में रहता है बम्बई , दिल्ली या कलकत्ते में नहीं रहता। वो खेती करता है। तो खेती की पैदावार जब तक नहीं बढ़ेगी, देश की गरीबी नहीं हटेगी और जब खेत की पैदावार बढ़ेगी, तभी दूसरे पेशे भी बढ़ेंगे। जब किसान की पैदावार बढ़ जाती है, बाजार में कुछ बेचता है, उसकी जेब में कुछ पैसा आता है तो वो दुकान पर जाकर देता है, दुकानदारी बढ़ जायेगी, दुकानदार बढ़ जायेंगे। किसान बढ़ती आमदनी के पैसे से अपनी जरूरत की चीजें खरीदेगा। मकान पक्का बनायेगा, तो सीमेंट और लोहा खरीदेगा। बैल अच्छा खरीदेगा, खाद अच्छी खरीदेगा। बेटे को पढ़ायेगा, उसके लिए कपड़ा और साइकिल और अगर लड़का अच्छा हुआ पढ़ने में, तो उसके लिए घड़ी खरीदेगा। बहू–बेटी के लिए अच्छा सामान खरीदेगा। हजार चीज की जरूरत होती है, तो जो खेत में पैदा नहीं होता, उसे खरीदने के लिए जब पैसा आ गया, पैदावार उसकी बढ़ी, उसको

बेचने के बाद, कारखानों में बना सामान वह खरीदेगा। उस सामान को पैदा करने के लिए छोटी–मोटी मशीनें उद्योग–धंधे अपने आप लग जायेंगे। तब बड़े शहरों में दूसरी चीजें बननी शुरू हो जायेंगी, किसान की जरूरत का सामान बेचने के लिए। खेती के अलावा तीन ही (......) बढ़ेगा ...रोड ट्रांसपोर्ट और उपज। (.........) उद्योग धंधे और परिवहन वो सब खेत की पैदावार बढ़ने से बने हैं। बहुत से लोग दोस्तों कहते हैं शहर के, लोग शिकायत करते हैं कि चरण सिंह किसान की बात कहता है, यहां की बात नहीं कहता। लेकिन दोस्तों मैं यह कहता हूं कि शहर तभी पनपेंगे, जब गॉव खुशहाल होंगे, जबे किसान खुशहाल हांगे। अगर किसान खुशहाल नहीं होगा, तो शहर पनप नहीं सकते, शहर चल नहीं सकते। दुकानें और (.......) चल नहीं सकतीं हैं। इसलिए मैं किसान की बात कहता हूं, क्योंकि किसान ही यहां सबसे ज्यादा हैं। फिर दोहराता हूं– किसान के खेतों की पैदावार अगर नही बढ़ी तो देश के बढ़ने का कोई सवाल उठता ही नहीं।

दूसरी बात महात्मा यह कहता था कि बड़े कारखाने बहुत कम लगाओ। हवाई जहाज बनाने के लिए बहुत–सा सामान, टैंक और गोली बारूद बनाने के लिए बेशक बड़े कारखाने लगाओ, हमारे लोहार नहीं बना सकते। बिजली पैदा करने के लिए, फौलाद पैदा करने के लिए, रेल का इंजन बनाने के लिए, मोटर बनाने के लिए – उनकी राय में मोटर अपने देश में बहुत कम होनी चाहिए– लेकिन जो कुछ हों, तो उनके बनाने के लिए बड़े–बड़े कारखानों की जरूरत होगी लेकिन जो चीज हाथ से बन सकती है और सैकड़ों वर्ष से अपने देश में बनती आ रही है, उसे बनाने के लिए बड़े कारखाने मत खोलो। जैसे कपड़ा हमारे देश में हाथ से बनता था। ढाके की मलमल दुनिया भर में मशहूर थी और किसान बनाते थे इसको। ये नहीं कि कोई जुलाहे अलग (.......) किसान ने आधा वक्त लगाया अपना खेत में और बाकी आधा वक्त लगाया किसी दस्तकारी में, कपड़े वगैरह बनाने में।

हजार चीजें हैं जो हाथ से बनती थीं। जब अंग्रेज आया था, तब 60 फीसदी आदमी खेत में काम करते थे और 25 फीसदी आदमी दस्तकारी में लगे हुए थे। अंग्रेज के जमाने में किसानों की तादाद 72 हो गयी थी। क्योंकि दस्तकारियां उस समय खत्म कर दीं अपने कारखाने के हित में इंग्लैंड के जो कारखानेदार थे उनके कारखाने का सामान हिंदुस्तान में बिका, तो हिंदुस्तान की दस्तकारी जिसमें 25 फीसदी आदमी लगे हुए थे वो बेरोजगार हो गये, दस्तकारियां खत्म हो गयीं। उन लोगों ने जो बेरोजगार हो गये (.........) पकड़ी। उनकी तादाद 72 हो गयी, खेती करने वालों की, और जो लोग दस्तकारी करते थे, उद्योग–धंधे करते थे, उनकी 25 फीसदी से ज्यादा तादाद घटकर दस हो गयी। आज दस फीसदी उद्योग–धंधे में लगे हुए हैं और 72 फीसदी खेत में लगे हुए हैं। एक और बात जल्दी मैं बता देना चाहता हूं आपको, जिस मुल्क में किसानों की तादाद ज्यादा होती है, मुल्क गरीब होता है। जिस मुल्क में दूसरा पेशा करने वालों की तादाद ज्यादा होती है, वो मुल्क मालदार होता है।

आपके मन में शंका होती होगी कि चौधरी साहब एक तरफ तो आप हमको ये मशविरा दे रहे हैं कि खेत की पैदावार बढ़ाओ, दूसरी तरफ कह रहे हैं कि किसानों की तादाद घटाओ। हां यह बात ठीक है दोनों बातें हैं। किसानों की तादाद घटानी है और खेत की पैदावार किसी तरह बढ़ायें। खेत नहीं बढ़ेंगे, आदमी हम बढ़ाना नहीं चाहते, घटाना चाहते हैं और फिर भी खेत की पैदावार बढ़ाना चाहते हैं, तो खेत में पूंजी लगाओ। अच्छी खाद दो, पानी दो, बीज दो और खेती का हुनर अच्छा सीखो। अगर अपने देश में नहीं है, तो दूसरे

किसानों से सीखो और इस तरह खेत की पैदावार बढ़ाओ। आर्थिक विकास का एक ही नुस्खा है, एक ही गुर है, एक ही फार्मूला है, दूसरा नहीं। खेत की पैदावार तिल–तिल के बढ़ानी है। लेकिन खेत में काम करने वाले लोगों की तादाद घटानी है और दूसरा पेशा करने वालों की तादाद बढ़ानी है। अगर यह हो जायेगा, तब देश मालदार हो जायेगा।

तो मैं आपसे कहता था कि छोटे रोजगारों में आदमी ज्यादा लगते हैं और बड़े कारखाने लगे, तो पूंजीपति पैदा हो जायेंगे। कम लड़के उसमें लगेंगे और बाकी लोग बेरोजगार हो जायेंगे। एक ही मिसाल दिये देता हूं। टैक्सटाइल कमेटी की रिपोर्ट सन् 1953 की है, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया की, जिसमें लिखा है कि बड़े कारखाने से जो कपड़ा आया, जो उस कारखाने से बना, उस कपड़े को बनाने के लिए 12 करघे चाहिए। 12 करघों से उतना कपड़ा बनेगा, जितना कि एक आदमी बड़े कारखाने के जरिये बना सकता है। तो आज सबसे बड़ा हमारे यहां उद्योग कपड़े का ही है, टैक्सटाइल में दस लाख आदमी लगे हुए हैं। अगर मेरी बात मेरे साथियों ने मानी और आप लोगों ने हमको दिल्ली में अधिकार सौंप दिया, तो मेरा इरादा यह है कि इन सेठों के बड़े–बड़े कारखानों के, मेरा हुकुम यह होगा कि तुम हिंदुस्तान में कपड़ा अब नहीं बेच सकते, तुमको बाहर बेचना होगा। अगर यह हमारी बात चल गयी, तो आज जो दस लाख लोग काम कर रहे हैं बड़े कारखानों में, उस कपड़े को पैदा करने के लिए 12 किसान लगेंगे। एक करोड़ 20 लाख लड़कों को रोजगार मिल जायेगा, एकदम बिना गवर्नमेंट के कुछ किये हुए। (तालियां) न तो तकनीकी ज्ञान की जरूरत पड़ेगी, न इसमें पूंजी की जरूरत पड़ेगी, न इसमें बिजली पैदा करने की जरूरत पड़ेगी। इस तरह से अनेक काम ... मैं कहता हूं 25 फीसदी आदमी हमारा दस्तकारी में लगा हुआ है। ये जो बर्तन बनते हैं, इसके, क्या नाम चीनी मिट्टी के, इनके लिए कारखाना बनाने की क्या जरूरत है ? ये तो हमारा कुम्हार जानता ही है, बना सकता है, बनाता था पहले। कालीन है, ये यू0पी0 और बिहार में इतना अच्छा हाथ से बनता था और अब भी बनता है, जो दूसरे देशों को जाता है। इंदिरा जी ने तीन कारखानेदारों को लाइसेंस दे दिया कालीन बनाने का। मैं जब वित्त मंत्री हुआ तो मैंने जो कारखाने कालीन बना रहे थे, उन पर 30 फीसदी टैक्स लगा दिया और जो हाथ से कालीन बना रहे थे उन पर टैक्स माफ कर दिया, ताकि वो कारखाने का मुकाबला कर सकें। मेरा बस चलता तो मैं कारखाने जो कालीन बना रहे हैं उनको बंद कर देता। मना कर देता कि नहीं, हाथ से कालीन बनाया जाये, जो अच्छे से अच्छा बनता है।

लेकिन हमारे कांग्रेस के लीडरों का यह खब्त था कि मशीन से काम किया जाये तो प्रगति का द्योतक है। रोटी भी मशीन से बनने लगी, कपड़ा तो मशीन से बनने ही लगा। रोटी बन रही है। गवर्नमेंट बेकरी ... गवर्नमेंट ने लगा दिये कारखाने डबलरोटी बनाने के। क्यों ? अरे भई आपके ग्वालियर में भी होंगे 10–15 छोटे–छोटे आदमी। बाजार से खरीदा आटा और उन्होंने आपके लिए डबल रोटी क्या बना दी। आपने दे दिया आटा, आपको बना दिया और गवर्नमेंट ने आज कारखाने लगा दिये रोटी बनाने के, क्यों भई। क्या फायदा ? हजारों आदमी लाखों आदमी बेकार हो गये हैं, हिंदुस्तान के अंदर, क्या फायदा हुआ आपने मशीन लगाकर अगर बेकरी लगा दी?

यही नहीं है, एक है बिस्कुट फैक्ट्री ब्रिटानिया। अंग्रेज आये, करोड़पति, कारखाना लगाया बिस्कुट बनने का, क्यों ? हिंदुस्तान के आजाद हो जाने के बाद भी अंग्रेज का कारखाना बिस्कुट बनाने के लिए क्यों ? अपने देश में लगा हुआ है ? और बिस्कुट छोटे

पैमाने पर बन सकता है, बड़े कारखानों की आखिर जरूरत क्या है ? यही नहीं दोस्तों ! रोटी की आदमी को सबसे जरूरत है। ये कारखाने से बनने लगे। कपड़े की जरूरत है। महात्मा के सामने सब लोग चरखा कातते थे। उनके जाने के बाद उनके सिखाये जो चेले थे, ये जब मालिक हो गये देश के, 300 कारखाने कपड़े बनाने के लगा दिये। और मकान भी बनने लगा मशीन से। (.........) ये सुनकर आपको शायद ताज्जुब होगा, मकान भी बनने लगा है कारखाने से। प्री फेब्रीकेटेड हाउसिंग सेक्टर, बना बनाया मकान बनाने का कारखाना, सुल्तानपुरी गांव है दिल्ली से 15 मील दूर, वहां लगा रखा है।

यह ठीक नहीं चल रहा है। मैंने हुक्म दिया है इस मकान बनाने के कारखाने को बंद करो। क्या जरूरत है कि दीवार और छत बनेगी कारखाने के जरिये और हमारे कारीगर क्या करेंगे, जो ईंट पाथते थे, वो लोग बेचारे कहां जायेंगे ?

ईंट ढोने वाले लोगों को, सारे देश में लाखों लोगों को रोजगार मिलता था, वो कहां जायेंगे ? और यह कहां जायेगा हमारा लुहार, क्या नाम बढ़ई ? जो कि मकान बनाने में सहायक होता था, राज मिस्त्री, कहां जायेंगे लाखों। लेकिन आज ये मशीन का काम है कि दूसरे देशों के लोग आयेंगे (.......) रूस और अमरीका के और ये देखकर जायें कि देश प्रगति कर रहा है। मैंने अभी हुक्म दे दिया है कि उस कारखाने को बंद करो। अब वो हमारे कारीगर ही बनायेंगे। क्यों मानें? कौन अक्ल की बात है ? ताजमहल को हमारे आर्टीजंस ने, दस्तकारों ने, हमारे कारीगरों ने ताजमहल जैसी दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारत हाथ से बना दी थी। लेकिन इंदिरा के कांग्रेस वालों के रहने के मकान मशीन से बनेंगे। इससे ज्यादा मूर्खता की बात क्या हो सकती है ? तो ये है हमारी मशीन।

हम देश की पैदावार को बढ़ाने पर जोर देंगे, गांव को जगायेंगे। गांव में आजकल रेगिस्तान हो गया है। नहीं है इसमें कोई रेशे, नहीं है इसमें कोई जीवन। सब कारीगर खाली बैठे हैं और खेत की जमीन कम है। थोड़ी–थोड़ी जमीन है, भूखे मरते हैं लोग। न गांव में स्कूल हैं, इस तरह के अच्छे, न गांव में कालेज हैं। वहां के पढ़े हुए लड़कों का मुकाबला नहीं करते, शहर के कालेज से पढ़े हुए लड़कों से। न अस्पताल हैं और न, छोड़ो पुरुषों के लिए, हमारी बहू–बेटियों के काम के लिए शौचालय–टट्टियां वगैरह नहीं हैं। उनको अपनी शर्म को छोड़कर सडकों पर बैठना पड़ता है। खेतों में नंगे। (..........) देश के तीस साल आजाद होने के बाद भी मैं फिर दोहराता हूं, गांव में हमारी बहू–बेटियॉ सबेरे–शाम को खेतों में जाकर बैठेंगी। हमको मालूम है, हम जिस घर में पैदा हुए हैं, हमारी माताजी, हमारी बहनें रात को टट्टी जाती थीं, दिन में नहीं जाती थीं। क्या बात है ? क्यों है यह हाल ? क्यों नहीं हमारा ध्यान गया ? इसलिए ध्यान नहीं गया कि इनके ध्यान का सवाल नहीं था। ये गांव से तो जाते थे एम0एल0ए0 और एम0पी0 लेकिन लीडरशिप जिनके हाथ में थी, उनकी बहू–बेटियों के लिए फ्लश लगे हुए थे। उनकी बहू–बेटियां बाहर नहीं जाती थीं। अगर उनकी बहू–बेटियों को बाहर जाना पड़ता तो कभी का इलाज हो जाता। कम से कम औरतों के लिए सार्वजनिक शौचालय हर गांव में बन जाते। पुरूषों के लिए छोड़ देते कि जंगल में चले जाओ। यह है आज गांव का हाल।

इसी तरीके से जो चूल्हे हैं हमारे वही पुराने के पुराने। जवान बेटियॉ, जवान लड़कियां, चूल्हे को झोंकते–झोंकते चार–पांच साल में उनका सौंदर्य खत्म, उनकी आंखें खराब, उनके फेफड़े खराब। और गोवर से जलाती हैं चूल्हा। जो गोबर खेत में डालने के लिए परमात्मा ने

बनाया, न कि चूल्हे में फूंकने के लिए। इसका इलाज आज कुछ नहीं है। बड़ी आसानी से हो सकता है लेकिन अब मैं यह बताना नहीं चाहता हूं, मेरे पास समय नहीं है लेकिन किसी का ध्यान हो तो, तो हम गांव को जगाना चाहते हैं, पुनर्जीवित करना चाहते हैं। अब जैसे महात्मा ने कहा था कि असली भारत–हिंदुस्तान रहता है .... गांव में रहता है। हम गांव को इसीलिए जगाना चाहते हैं, तभी भारत जागेगा और केवल शहरों से जागने वाला वो नही है।

दूसरी बात जैसे कहा, मैंने दस्तकारी की बात की है .... ये तो बेईमानी की बात है यह क्यों है ? ज्यादातर बेईमानी हो रही है। एक तो वैसे बेईमान तो हैं ही हैं लेकिन एक कारण रिश्वत और भ्रष्टाचार का और गलत नीतियों का यह भी है कि हमारे पॉलिटिकल लीडर्स को इलेक्शन लड़ने के लिए सेठों से रूपया लेना पड़ता है। असेंबली का इलेक्शन लड़ा, पार्लियामेंट का इलेक्शन लड़ा तो लाखों–लाखों रूपया खर्च होता है और लेते हैं सेठों से। मैंने जब कांग्रेस को सन् 67 में छोड़ा तो हमने उस समय तय कर लिया था कि हम सेठों के रूपये से इलेक्शन नहीं लड़ेंगे। मैं तफ्सील में नहीं जाता हूं। मेरे पास रूपये देने के लिए एक से एक आया। पांच लाख रूपये, दस लाख रूपये लेकर आया था। तीन बार मेरे पास आया था लेकर मैंने इंकार कर दिया। सन् 68 में एक सेठ ने मुझको बुलाया कि पैसा और .... सब कुछ है, मैं आप जैसा कुशल और ईमानदार प्रशासक हिंदुस्तान के लिए चाहता हूं, जो आदमी सारे देश में (.................) मैं बूढ़ा हो गया हूं। मेरे पास करोड़ों रूपये हैं। मैं सब कुछ आपको देने को तैयार हूं। मैंने मना कर दिया। उन्होंने कहा मैं बदला कुछ नहीं चाहूंगा। आप जो मना कर रहे हैं। मैंने कहा यह बात मैं जानता हूं, आप बदला नहीं चाहेंगे, एवज नहीं चाहेंगे और कोई लाइसेंस नहीं चाहेंगे, परमिट नहीं चाहेंगे। मैं जानता हूं, मैं ने आपकी तारीफ सुनी है। आज वो बूढ़े आदमी रहे नहीं। मैं उनको ले के कारखाने ... बहुत मालदार हैं। लेकिन मैंने कहा सेठ जी माफ करना मेरा सिर आपके सामने अहसान से झुक जायेगा।

सेठों के पास रुपया कहां से आता है ? दूसरी पार्टियों के पास करोड़ों–करोड़ों रुपया है। इंदिरा के पास करोड़ों हैं, जगजीवनराम के और उनके साथियों के पास करोड़ों है, इकट्ठा किया है। जनसंघ वालों ने खूब इकट्ठा किया। और जगजीवन राम भी मशहूर आदमी हैं। तो रुपया उनके पास होगा। तो मेरे साथी कहते हैं हम क्या करें? मैंने कहा, ये कि पहले कोशिश करो कि ईमानदार लोगों को खड़ा करो। ईमानदार लोग खड़े होंगे तो जनता बिना पैसे के वोट देगी, यह मेरा तजुर्बा है। सन् 74 में जो हमने असेंबली का इलेक्शन उत्तर प्रदेश में लड़ा–425 सीटें। कांग्रेस वालों ने 21 करोड़ रूपाये खर्च किये। कुछ लोग कहते हैं 30 करोड़, 21 करोड़ से कोई कम नहीं बताता। पांच लाख रूपये का एक सीट पर असर पड़ता है और मेरे पास पांच लाख रूपये कुल नहीं थे, इन सीटों को लड़ने के लिए। सारे यू0पी0 के अंदर ये सूरत थी। फिर मुझे अपनी बात कहनी पड़ती है, कहनी शायद मुझको चाहिए नहीं कि मैंने वहां किसानों के लिए इतना किया गरीब आदमी इतना मुझसे प्यार करता था और करता है कि अगर मुझको, मेरी गाड़ी जा रही है और देखने के लिए आया दौड़कर और मुझको नहीं देख पाया और गाड़ी पर जो धूल पड़ गयी, उसकी मिट्टी उठाकर उसने अपने माथे पर लगा ली। और उस समय बहुगुणा थे चीफ मिनिस्टर, उन्होंने इतनी गैर–ईमानदारी से काम लिया उस इलेक्शन में, जिसका बयान हो नहीं सकता।

वी0पी0 सिंह ने यह कहा था कि भारतीय क्रांतिदल की तादाद, मेंम्बरों की 200 से ज्यादा आयेगी। कांग्रेस की 100 से ज्यादा नहीं आयेगी और इंदिरा का कोई मुकाबला अगर

हिंदुस्तान में और कांग्रेस का कर सकता है, तो भारतीय क्रांतिदल और चरण सिंह कर सकता है और कोई नहीं कर सकता। लेकिन नतीजा हुआ था, हमारी 106।

तो, मैं इसलिए अपने तजुर्बे से कह रहा हूं, मैं इन सब साथियों से कह रहा हूं, आपके जरिये और आपको भी बताना चाहता हूं कि अगर आप ये चाहते हैं कि आपके लिए नीतियां बनें, तो खर्चा मत कराओ अपने कैंडिडेटों से। वरना जिनसे रुपया लेंगे, उन्हीं के हक में नीतियां बनेंगी और तुम्हारे हक में वो नीतियां नहीं बन पायेंगी।

और एक बात और कहना चाहता हूं कि यह मुल्क तो हमेशा रहेगा। आदमी आते हैं, जाते हैं, लीडर आते हैं, जाते हैं, सब चले जाते हैं, मैं बहुत ज्यादा रहा पॉलिटिक्स में, दो–चार साल। मेरे साथी हैं, लड़के हैं, ये रहेंगे सालों साल। आखिर पचास साल, चालीस साल से काम करते आये हैं। मैं इनको यही मशविरा देता हूं कि कभी कोई ऐसा काम न करो, जिससे कि कोई गलत उदाहरण पेश हो। ईमानदारी से रहो। आज नहीं जीतोगे, कल जीतोगे। कल नहीं जीते तो ये जनता बिना पैसे तुम्हें परसों को जितायेगी।

अगर मेरी पार्टी की ओर से कोई गलती से हमारा बेईमान कैंडिडेट खड़ा हो जाये, तो किसानों और दोस्तों उसको वोट मत देना, मुझको कोई शिकायत नहीं होगी।

इन शब्दों के साथ बातें बहुत हैं, देश की कहानी लंबी है। देश का प्रशासन डूब चुका है हिंद महासागर में, उसको निकालना है। डूबने से बचाने का सवाल नहीं है, डूब चुका है, उसको निकालना है। इन शब्दों के साथ मैं अपना कथन समाप्त करता हूं। मैं एक बारगी तकरीर कर रहा हूं, तीन दिन के अंदर। तीन दिन से मैं लगा हुआ हूं, मैं थक गया हूं। मेरी उमर 77 वर्ष की है, ये तुम्हारी तालियां, तुम्हारा प्यार मुझे काम करने को मजबूर करता है। (नारे)

अब मुझे ... तुम्हारी .... तुम्हारे ... अब मैं .... अब मुझको ग्वालियर तकरीर करनी है। वहां बड़ी सभा होगी। बड़ी सभा हुई तुम्हारी भी, बहुत जयादा। अभी आज मुझे लखनऊ पहुंचना है और फिर उसके बाद और जगह जाना है। दो दिन से वहां गवर्नमेंट का काम इकट्ठा होगा, वो मुझको करना है। मुझे इजाजत दो जाने की। केवल मेरे साथ तीन नारे लगा दो–

भारतमाता की जय, भारत माता की जय, महात्मा गांधी की जय, महत्मा गांधी की जय, लोकदल–कांग्रेस की जय, लोकदल–कांग्रेस की जय।

————————————